Vol. 2, No. 4 (October 2013) P. 12-14 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

विश्व संगीत में चीनी संगीत की महत्ता

आवेश कुमार, वाराणसी
Email: aveshpal5793@gmail.com

चीन की सभ्यता, कला और संस्कृति प्राचीनकाल से ही पुष्पित एवं पल्लवित हो रही है। भारत और चीन का सांस्कृतिक सम्बन्ध तो हजारों वर्ष पुराना है। चौथी शताब्दी तक चीनी लोग भारतीय संस्कृति एवं संगीत आदि से काफी प्रेरित होने लगे थे। भारतीय संगीत चीन में भारत के संगीतज्ञों द्वारा पहुंचा, ये संगीतज्ञ कूची (चीन) में रहने लगे। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने लिखा है कि कूची के रहने वाले बाँसुरी बजाते थे परन्तु उनका गाना–बजाना भारतीय ढंग लिए हुए था। भारतीय संगीत चीन के राजदरबारों में बहुत सराहा गया। चीन की पुस्तकों में भारतीय संगीतज्ञ मृदंग, शंख, बाँसुरी, बैन, वीणा, तानपुरा आदि का उपयोग संगीत में करते हैं यह उल्लेखित है।

चीनी संस्कृति की उन्नति ईसा से 2852 वर्ष पूर्व फूसी नामक सम्राट के समय से हुई, ऐसा उल्लेख मिलता है, उसने संगीत को बहुत प्रोत्साहन दिया तथा कई वाद्यों का अविष्कार भी किया। चीन की टिस–एव जाति में जो यहां के ब्राम्हण वंशो की तरह है, संगीत की विशेष अनुरागी रही है। राजा शिन–नांग (2736–2705 ई0पू0) के समय में भी तंत्री वाद्यों का महत्व था। राजा हुआँ–टि (2704–2595 ई0पू0) ने स्वयं रिड आर्गन, घण्टी, स्वर आदि का अविष्कार तथा सांगीतिक संस्कार भी बनाए। 16वीं शताब्दी में चीनी इतना संगीतप्रिय हो गए कि वहां का सम्राट कालौमू (औरंगजेब के समान) संगीत प्रचार पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगाकर भी असफल रहा क्योंकि उसके उत्तराधिकारी यांग्टी संगीत के अत्याधिक प्रेमी थे। उन्होंने 'पेमिंग्टा' पद्धति से कई रागों की रचना कर चीनी समाज में उन्हें प्रतिष्ठित किया था।

चीनी संगीत के विकास के विषय में जर्मन संगीतशास्त्री ''कार्ट सचस'' ने कहा है–

"Chinese music can be traced back to the *Shang* dynasty between the 14th and 12th centuries B.C. Japanese music began only in the 5th centuries A.D., when Korean court music was adopted".

शिक्षा के क्षेत्र में चीन ने भारत से कौन–कौन सी विधाएं प्राप्त की इस प्रसंग में ''रमानन्द चटोपाध्याय'' ने लियां–चि–चाओ रचित "Kingship between Chinese and Indian Culture" प्रबन्ध से उल्लेख किया है कि साक्षात या परोक्ष रूप से भारत से चीन ने जो विधाएं प्राप्त की वह है संगीत, चित्रकला, स्थापत्य, गद्य, कविता, नाटक, कहानी आदि की रचना शैली, अभिनय, चिकित्सा, वर्णमाला व लिपि आदि।

History of great monarchic of china में फादर एलनेरी ने लिखा है कि चीन में घूमने वाले गायक वादक थे जो विवाह आदि उत्सवों में गाते–बजाते थे। पुजारी भी संगीतज्ञ होते थे। गुलिक नामक लेखक की मान्यता है चीनी संगीत का विकास उनके लोकसंगीत से हुआ है। यद्यपि चीनी संगीत पर बहुत से विदेशी प्रभाव पड़े हैं, परन्तु उनकी शैली परम्परागत ही रही।

चीन के संगीत में केवल पाँच ही स्वर हैं। चीनी संगीत शास्त्र के अनुसार प्रकृति में आठ विभिन्न सांगीतिक ध्वनियाँ हैं। चमड़े की ध्वनि, पत्थर की ध्वनि, धातु की ध्वनि, मिट्टी की ध्वनि, रेशम

की ध्वनि, लकड़ी की ध्वनि, बांस की ध्वनि, पृथ्वी की ध्वनि यह सिद्धान्त वैज्ञानिक भी हो सकता है परन्तु यह पौराणिक कथाओं के अनुसार पृथ्वी की ध्वनि ही सबसे मधुर ध्वनि है।

कार्ट सचस ने चीनी स्वरों का परिचय देते हुए "The scale is usually presented in the form kung (do), shang (re), chiao (mi), chih (sol), yu (la), kung (do) चीनी संगीत में दीर्घकाल तक केवल 5 स्वरों का व्यवहार रहा जो 12 सूक्ष्म स्वरों में विभक्त थे। उनके स्वर समूह पाश्चात्य के C D E G A एवं भारतीय सा रे ग प ध के समान है। कहा जाता है कि चीनी स्वर विभिन्न दिक, वर्ण, ग्रह आदि के अनुसार कल्पित है जिसका कर्ट सचस ने वर्णन किया है।

Notes	kung	shang	chiao	chih	yu
Cardinal points	North	East	Centre	West	South
Planets	Mercury	Jupiter	Saturn	Venus	Mars
Elements	Wood	Water	Earth	Metal	Fire
Colours	Black	Violet	Yellow	White	Red

ऐलेन डेनेलू ने चीनी स्वरों के साथ भारतीय व पाश्चात्य स्वरों की तुलना की, जो इस प्रकार हैं –

Chinese Notes	Western Notes	Indian Notes
Kung	C	sa
Chih	G	pa
Shang	D	re
Yu	A	dha
Kyo	E	g

ऐलेन डेनेलू ने कहा है कि सिउ–म–थिन के मतानुसार इन स्वरों को पंच–लिउ माना जाता था जिनके नाम इस प्रकार थे होयंग–चंग, थइ–चिउ, कू–सेन, लिन–चंग, नान–लिउ।

कालान्तर में चीनी संगीत में 7 स्वरों का विकास हुआ। उन स्वरों की आन्दोलन संख्या एवं उनके साथ पाश्चात्य स्वरों का सम्बन्ध इस प्रकार है।

पाश्चात्य स्वर	C	D	E	F	G	A	B	C	D
आन्दोलन संख्या	240	270	300	320	360	400	450	480	540
चीनी स्वर	haf	chi	ye	shan	tse	fung	fun	len	yu
आन्दोलन संख्या	256	288	320	341	384	427	480	512	576

भारतीय संगीत के समान चीनी संगीत भी षड्ज पर आधारित होता है। वहा स्वर संगति हारमनी के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। वादी, संवादी की रीति भी यहाँ प्रचलित है। चीन संगीत की ग्राम रचना की प्रक्रिया 3 प्रकार की है। 1– प्राकृतिक 2– चक्रिक 3– संक्रमिक। भारतीयों ने प्राकृतिक प्रक्रिया को अपनाया है। इस ग्राम के स्वर मानव और पशु पंक्षियों के कंठ से अनायास ही निकलते हैं। चीन ने जिस ग्राम की रचना की थी, वह चक्रिक प्रक्रिया के अनुसार ही संभव है। इस प्रक्रिया का आधार सा–प का संवाद ही है।

चीनी संगीत मनीषियों ने आठ प्रकार की ध्वनियों का उल्लेख किया है–

1– चमड़े की ध्वनि : ढोल जैसे इंग–कौ, किन–की, सू–कौ, टौ–कौ, थइपंग–कौ।

2– पत्थर की ध्वनि : शंख व वंशी जैसे पेन–किंग, सि–किंग, है–टो, यू–टी।

3– धातु की ध्वनि : घण्टी करताल की तरह चुंग–बेल, लो–गंग, हाओ–टुंग।
4– रेशम के धागे की ध्वनि वींणा के जैसे किन, से, पपा, सन–हीन, हू–किन, यांग–किन।
5– लकड़ी की ध्वनि काठ के बक्से सदृश चू, यू, मू–यू, पै–पन, शोन–पन।
6– लौकी या कद्दू की ध्वनि एक तारा दो तारा की तरह माउथ आर्गन, चेंग।
7– मिट्टी की ध्वनि मटका जातीय वाद्ययंत्र जैसे सुयन।
8– बांस या हवा की ध्वनि वंशी जातीय यंत्र से सम्बन्धित जैसे पै–हवो, टै, सोना।

श्री सौरीन्द्रमोहन टैगोर ने अपनी पुस्तक "Universal history of music" में लिखा है कि लगता है चीनी लोग अपने स्केल को बराबर–बराबर भागों में विभाजित करते थे। कहीं–कहीं सात स्वरों का भी स्वल्प प्रचार था। श्री टैगोर की मान्यता है कि ईसा से पहले चीन में सात स्वरों का स्केल ही प्रचार में था, जिसमें पाँच मुख्य स्वर दो सहायक स्वर होते थे। इनके क्रम में परिवर्तन करने पर बारह स्वर मिलते हैं। जिनमें 84 मोड्स निकाले जा सकते थे।

चीनी चर्मनिर्मित प्रथम श्रेणी के लयवाद्य इस प्रकार हैं –

1– यिंगकोउ	2– किंगकोउ	3– सीकोउ
4– ताओकोउ	5– पैंगकोउ	6– थाईपैंगकोउ
7– चीसिन		

द्वितीय श्रेणी में पिन्–किंग, सी–किंग, यूटी, यूसियो, हाइटू आदि। तृतीय श्रेणी में चांग या घण्टा, पो या करताल, लापा या बड़ा बिगुल, हौटुंग आदि वाद्यों का समावेश किया गया है।

चीन के निवांसी संगीत को सम्मान की दृष्टि व आदर भाव से देखते थे। उनकी मान्यता थी कि संगीत से ही सभी विज्ञानों की उत्पत्ति हुई है। चीन के महान दार्शनिक कन्फूशियस के अनुसार प्राचीन काल में चीन के महान व्यक्तियों को यह विश्वास था कि संगीत राष्ट्र की उन्नति और संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है। भारतीयों की तरह वे संगीत को आध्यत्मिक ज्ञान मानते थे जो साधना से प्राप्त होता है।

सन्दर्भ–

1– मोहन शौरेन्द्र, यूनिवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्युजिक पृष्ठ सं0 93–94
2– सेन, अरूण कुमार भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन तृतीय संस्करण 2005 मध्यप्रदेश हिंदी अकादमी भोपाल।
3– शर्मा, दाश अमल कुमार प्रथम संस्करण 1990 राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
4– Music of India and china, Hindustan slanders Calcutta 1855
5- Sachs Curt, The Rise of music in the ancient world, J.M. Dents sons Ltd. London. U.K. 1944
6– पत्रिका : संगीत जून 1986 सम्पादक लक्ष्मीनरायण गर्ग संगीत कार्यालय हाथरस उत्तर प्रदेश।